www.EducationLib.com

राजस्थान का इतिहास

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

Notes

मेवाड़ का इतिहास

(राजस्थान का गौरव)

PAGE NO. :
DATE : / /

→ शिवी — जनपद , — राजधानी → मध्यमिका (वर्तमान चित्तौड़)

(उप-नाम)

→ प्राग्वाट → मेदपाट → मेवाड़ , वर्तमान → उदयपुर

↓

मेद अर्थात् मेव या मेर जाति का अधिकार रहने से नाम (मेदपाट , मेवाड़) पड़ा

- मेवाड़ के शासक स्वयं को रघुवंशी मानते थे।
- राज्यचिन्ह — "जो दृढ़ राखे धर्म को तिहि राखे करतार"

मेवाड़

- मेवाड़ पर प्रारम्भ में मौर्यों ने शासन किया।
- चित्रांग मौर्य ने चित्तौड़गढ़ दुर्ग का निर्माण करवाया
  ↓
  चित्रकूट की पहाड़ी (मेसा का पठार) पर , गंभीरी व बेड़च नदी पर
  ↓
  8 वीं शताब्दी में बनवाया
  ↓
  (वंशज) → मौर्य राजा मान मोरी 734 ई० मे शासन कर रहा था।

⇒ इधर

- 566 में मेवाड़ में गुहिल वंश की स्थापना गुहिलादित्य ने की
- माता → पुष्पावती
- पिता → शिलादित्य

(वंशज)
↓
→ काल भोज —उपाधि→ बप्पा रावल
(गुहिल वंश के वास्तविक संस्थापक)

→ हारित ऋषि के शिष्य थे
→ उनकी गाय चराते थे

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

Note:- चित्तौड़गढ़ दुर्ग → मालवा का प्रवेश द्वार / चित्रकुट दुर्ग / खीज्राबाद / सबसे बड़ा लिविंग फोर्ट / किलों का सिरमोर / राजस्थान का गौरव / राज० का दक्षिणी प्रवेश द्वार।

PAGE NO. :
DATE : / /

Notes

बप्पा रावल :- (734 ई० – 753 ई०)

- मेवाड़ राज्य का वास्तविक संस्थापक
- इनका मुल नाम कालभोज था बप्पा इनकी उपाधि गुरु ने दी
- गुरु हारित ऋषी की गाय चराते थे
- 734 ई० में मौर्य राजा मान मोरी से चित्तौड दुर्ग जीता।
- एकलिंग जी के मंदिर का निर्माता
- बप्पा रावल ने नागदा को राजधानी बनाया।
- बप्पा की समाधि एकलिंग जी से 1 कि०मी दूर नागदा में

अल्लट / आलू रावल :- (बप्पा रावल के वंशज)

- अल्लट ने हूण राजकुमारी हरिया देवी से विवाह किया।
- अल्लट के काल में नौकर शाही व्यवस्था प्रारम्भ हुई।
- हूण एक विदेशी लडाकू था।
- राज० का पहला अन्तर्राष्ट्रीय विवाह किया।
- आहड को राजधानी बनाया।
- वराह मंदिर के निर्माता

जैत्र सिंह :-

- चित्तौड़ को राजधानी बनाया।
- जैत्र के समय दिल्ली सुल्तान इल्तुतमिश ने मेवाड़ की राजधानी नागदा पर आक्रमण करके क्षति पहुंचाई।
- भूताला का युद्ध — जैत्र सिंह व सुल्तान इल्तुतमिश (1222–1229 ई०) के मध्य

समर सिंह :-

- समरसिंह ने रतन सिंह व कुम्भकरण का जन्म।
- कुम्भकरण ने नेपाल में गुहिल वंश की स्थापना की।
व नेपाल (काठमांडू) में पशुपति नाथ मंदिर का निर्माण करवाया।

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

Notes

पद्मिनी पिता गंधर्वसेन

Note A० K (अलाउद्दीन खिलजी)

रतन सिंह :- (1301)-(1303)

- ने रानी पद्मिनी (श्रीलंका, सिंहल देश) से विवाह किया।
- 28 जनवरी 1303 में दिल्ली शासक A० K० ने आक्रमण किया चित्तौड़ पर।
- 26 अगस्त 1303 को चित्तौड़ को A० K० ने जीत लिया
- युद्ध में गोरा व बादल (चाचा - भतीजा) ने अलाउद्दीन पर भयंकर आक्रमण किया। और वीरगति को प्राप्त हुये।
- रानी पद्मिनी ने 1600 स्त्रियों के साथ जौहर किया।
- मेवाड़ का प्रथम आकार राज० का दूसरा साका "(राजस्थान का सबसे बड़ा साका)
- A० K ने अपने पुत्र खिज्र खाँ को राज्य सौंपा। जौहर मेला - (नवरात्रा)
- चित्तौड़गढ़ का नाम बदलकर खिज्राबाद कर दिया।
- चित्तौड़ का सजीव वर्णन अमीर खुसरो ने किया।

* - अमीर खुसरो के ग्रंथ

↓

1. खज़ाइन - उल - फुतूह।
2. तारीख - ए - अलाई।

* - मलिक मोहम्मद जायसी - पद्मावत ग्रंथ की रचना

⇒ A० K० द्वारा चित्तौड़ पर आक्रमण करने के कारण :-

- A० K का अत्यधिक महत्वाकांक्षी और साम्राज्यवादी होना।
- चित्तौड़ दुर्ग का सामरिक महत्व व भौगोलिक स्थिति।
- सुंदर रानी पद्मिनी को पाने की लालसा।

- खिज्र खाँ 1313 ई० में मालदेव चौहान (कान्हड़दे का भाई) को राज्य सौंपकर चला जाता है।
- मालदेव चौहान ने सिसोदा गाँव में साम्राज्य का विस्तार किया।

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

माल देव – चौहान
↓
पुत्र
जयसिंह / जैसा सिंह ← [हम्मीर देव ओतगया] → सिसोदा गाँव
हम्मीर देव सिसोदिया
आक्रमण किया

महाराणा हम्मीर देव :-
- मेवाड़ में सिसोदिया वंश की नींव रखी।
- हम्मीर देव को कीर्तिस्तंभ में "विषम घाटी पंचानन कहा" जाता है।
- हम्मीर देव को रसिक प्रिया में वीर राजा कहा।
- इसके समय में मेवाड़ के राजा महाराणा कहलाये।
- हम्मीर देव को मेवाड़ का उद्धारक कहा गया।

Note — मुख्यतः मेवाड़ का उद्धारक "भामाशाह" को कहते हैं।
- चित्तौड़ दुर्ग में अन्नपूर्णा माता का मंदिर बनवाया
- जानकारी → हम्मीर मदमर्दन ग्रंथ — लेखक → जयसिंह सूरि।
- सिंगोली (चित्तौड़) युद्ध → हम्मीरदेव व मोहम्मद बिन तुगलक

लाखासिंह / लक्षासिंह :- (1382–1421)
- → के काल में एक बंजारे ने पिछोला झील बनवाई (उदयपुर)
- → के काल में जावर में चाँदी की खान निकली।
  - → सीसा – जस्ता → गेलेना
  - → एशिया की सबसे बड़ी खान
- (गलती से नारियल भेजा) (वृद्धावस्था में) → बेटा → राणा चूड़ा → "मेवाड़ का भीष्म पितामह"
  " मेवाड़ का राम"

मारवाड़ का राजकुमार → रणमल राठौड़ → बहन → हंसाबाई → विवाह शर्त – सिंहासन पर हंसाबाई पुत्र ही बैठेगा।
→ मोकल → बेटा

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

Notes

PAGE NO.: DATE: / /

हंसाबाई → शासक बेटा (मोकल) बना —— संरक्षक → रणमल राठौड़ (ऊँचे पदोपर राठौड़ो की नियुक्ति की)

शंका की दृष्टिसे देखती थी → राणा — चूंडा (चित्तौड़ छोड़कर चला गया माण्डु (गुजरात))

- चाचा व मेरा ने (रणमल राठौड़ के कहने पर) मोकल की हत्या 1433 में कर दी। (पुत्र)

⇒ **महाराणा कुंभा (1433–68)**

→ माता → सौभाग्य देवी, पिता → महाराणा मोकल

→ उपाधियाँ :- (अभिनव भरताचार्य ② राणेराय ③ राजगुरू ④ हालगुरू) ⑤ दानगुरू ⑥ छापगुरू ⑦ शैलगुरू ⑧ हिन्दू सुरताण

→ समस्याएं ① पिता के हत्यारों का बदला लेना
② रणमल राठौड़ के बढ़ते प्रभाव को खत्म करना।

महाराणा कुम्भा —— चाचा व मेरा मालवा के शासक की शरण में आ गये। → महमूद खिलजी

को पराजित किया छः माह बंदी रखा बाद में छोड़ दिया

(सारंगपुर का युद्ध 1437)

(कुम्भा विजय हुआ — मालवा विजय)

(Imp.)
- मालवा — महमूद खिलजी
- गुजरात — कुतुबुद्दीन शाह

— चम्पानेर की संधि की (1456 ई०)

↓

महाराणा कुम्भा के विरुद्ध

↓

संधि को महाराणा ने विफल कर दिया।

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

विजय स्तम्भ / जय स्तम्भ / कीर्ति स्तम्भ / विष्णु ध्वज / विक्ट्री टॉवर / (1440–1448)

1. – मालवा विजयपर चित्तौड़गढ़ मे बनाया गया
 – "भारतीय मुर्तिकला का विश्वकोष"
 – मुर्तियों का अजायबघर / शब्दकोश)
 – माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का प्रतिक चिन्ह
 – राजस्थान पुलिस का प्रतीक चिन्ह
2. – यह नौ मंजिला है। ऊंचाई – 120 फीट
 – वास्तुकार → जैता, नापा, पुंजा
 – कर्नल टॉड – यह कुतुबमीनार से बेहतर है।

Note:- यह राज० की प्रथम इमारत है जिस पर 15 अगस्त 1949 में 1रु का डाक टिकट जारी किया।

कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति :- निर्माण → जीजा (जैन व्यापारी)
रचनाकार → महर्षि अत्रि
बाद में बेटे महेश भट्ट ने पूर्ण की। (1460) ↓ (1460 ई०)
– विजय स्तम्भ से 1 कि०मी० दूर

जहर दे दिया
रणमल का प्यार
रणमल को मारने को कहा
रणमल राठौड़ —— दासी —— भारमली —— कुम्भा
भारमली का प्यार
↓ पुत्र
राव जोधा (मंडोर भाग गया)
 → जोधपुर बसाया (1459)
 – मेहरानगढ़ दुर्ग बनाया (1459)
 – कुल देवी → रिद्धी बाई
 ↓
 (करणीमाता / डोकरी / जोगमाता / दाढ़ीवाली माता)

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

* [आवल–बावलसंधि] – 1458
– राव जोधा व महाराणा कुम्भा के बीच
– हंसाबाई ने करवाई।
– मारवाड़ व मेवाड़ सीमाओं का निर्धारण।

ग्रन्थ → वीर विनोद — लेखक → श्यामलदास

~~मेवाड़ में 84 दुर्ग हैं → 32 का निर्माण कुम्भा ने करवाया।~~

↓

"स्थापत्य कला का स्वर्ण युग कहा जाता है"

कुम्भलगढ़ :-

रानी कुंभल की याद में बनवाया

अबुल फजल ने कहा → "दुर्ग देखने पर सिर की पगड़ी गिर जाये"

अन्य दुर्ग :-

बसंती दुर्ग → सिरोही
अचलगढ़ दुर्ग → आबू (सिरोही)
कुशाल माता का मंदिर → बदनौर – भीलवाड़ा
कुम्भ श्याम मंदिर → चित्तौड़गढ़
1460 ई० का कुम्भलगढ़ शिलालेख – कुम्भा की जानकारी देता है।
↓
को महेश भट्ट ने पूरा किया।

⇒ कुम्भा के संगीत गुरु —— सारंग व्यास
→ स्वयं के रचित ग्रंथ — ① संगीत राज ② संगीत मीमांसा ③ सूड प्रबंध ④ रसिक प्रिया
→ की पुत्री → रमाबाई / वागीश्वरी — महान संगीतज्ञ थी।

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

Notes

PAGE NO.: DATE: / /

→ कुम्भा ने एकलिंग महात्म्य ग्रन्थ की रचना प्रारम्भ की

→ रचना पुरी की

→ की तुलना पुराणो से की गई है।

→ वेतनिक कवि — कान्ह व्यास

(1468) → कुम्भा, बेटा → ऊदा → (1468–73) तक शासन

कटार से पिता की हत्या

रायमल (कुम्भा का दूसरा बेटा राजा बना)

→ को मेवाड के सरदारों ने भगा दिया

बिजली गिरने से मृत्यु

→ पितृ हन्ता

⇒ महाराणा रायमल (1473ई० – 1509ई०)

→ (तीन पुत्र)

→ ① पृथ्वीराज सिसोदिया — जहर खाने से मृत्यु हो गई

→ ② जयमल → सोलंकियों के साथ युद्ध में मारा गया।

→ ③ संग्रामसिंह / राणा सांगा → राजा बना।

→ भाइयों के प्रहार से बचकर फरार

→ की आँख फोड़ दी

→ कर्मचंद पंवार के पास अजमेर में शरण ली।

→ रावत की उपाधि।

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

बाड़ी (धौलपुर) का युद्ध – 1519 ई०

इब्राहिम लोदी — राणा संग्राम सिंह

मियाँ ~~मक्खन~~ भेजा ——→ बुरी तरह हार गया।

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

⇒ महाराणा सांगा / संग्रामसिंह (1509 – 1528 ई०)

→ 16वीं शताब्दी का सबसे प्रभावशाली राजा।

→ 'हिन्दू पथ' की उपाधि मिली।

→ अंतिम भारतीय हिन्दू सम्राट थे।

→ 80 घाव थे शरीर पर – कर्नल जेम्स टॉड ने 'सैनिक भग्नावशेष' कहा।

⇒ सांगा व इब्राहिम लोदी के बीच युद्ध

मेवाड़ महाराणा सांगा ←—— दिल्ली सुल्तान इब्राहिम लोदी

*खातोली (बूंदी) का युद्ध, 1517 — सुल्तान ने आक्रमण किया, हार गया

⇒ [*बाड़ी (धौलपुर) का युद्ध 1519] — पुनः सुल्तान ने आक्रमण किया, हार गया

⇒ सांगा व खिलजी IInd के बीच युद्ध

मेवाड़ राजा महाराणा सांगा ←—— मालवा (m.p) सुल्तान महमुद खिलजी IInd

सुल्तान ने महाराणा पर आक्रमण किया, और हार गया।

⇒ [*गागरोन (झालावाड़) का युद्ध 1518]

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

मेवाड में अकबर (समकालीन → उदयसिंह, प्रतापसिंह, अमरसिंह)

Notes

PAGE NO.:
DATE: / /

बाबर व इब्राहिम लोदी (पानीपत का प्रथम युद्ध, 1526)

लोदी सेनापति दौलतखां लोदी व आलमखां बाबर सेना में मिल गये

काबुल बादशाह बाबर

इब्राहिम लोदी मालवा सुल्तान

बाबर ने लोदी पर आक्रमण किया, लोदी मारा गया

पानीपत का प्रथम युद्ध, 21 अप्रैल 1526 (हरियाणा)

- इस युद्ध से दिल्ली से आगरा तक बाबर का अधिकार हो गया।

Note

पानीपत का प्रथम युद्ध, 1526 — बाबर व इब्राहिम लोदी
पानीपत का द्वितीय युद्ध, 1556 — अकबर व हेमु
पानीपत का तृतीय युद्ध, 1761 — मराठा व अहमदशाह अब्दाली

⇒ बाबर सेना व सांगा सेना के बीच युद्ध

सांगा सेना

बाबर सेना

बाबर सेना ने सांगा पर आक्रमण किया, फिर हार गई

⇒ [* 16 फरवरी 1527, बयाना (भरतपुर का युद्ध)]

⇒ प्रलोभन बाबर द्वारा

- शराब छोड़ दूंगा
- तकमा हटा दूंगा
- चाँदी के सिक्के भेंट करूंगा
- जिहाद (धर्मयुद्ध) का नारा दिया।

Scanned with CamScanner

Notes

PAGE NO.: DATE: / /

⇒ खानवा (भरतपुर) का युद्ध 17 मार्च 1527 :-

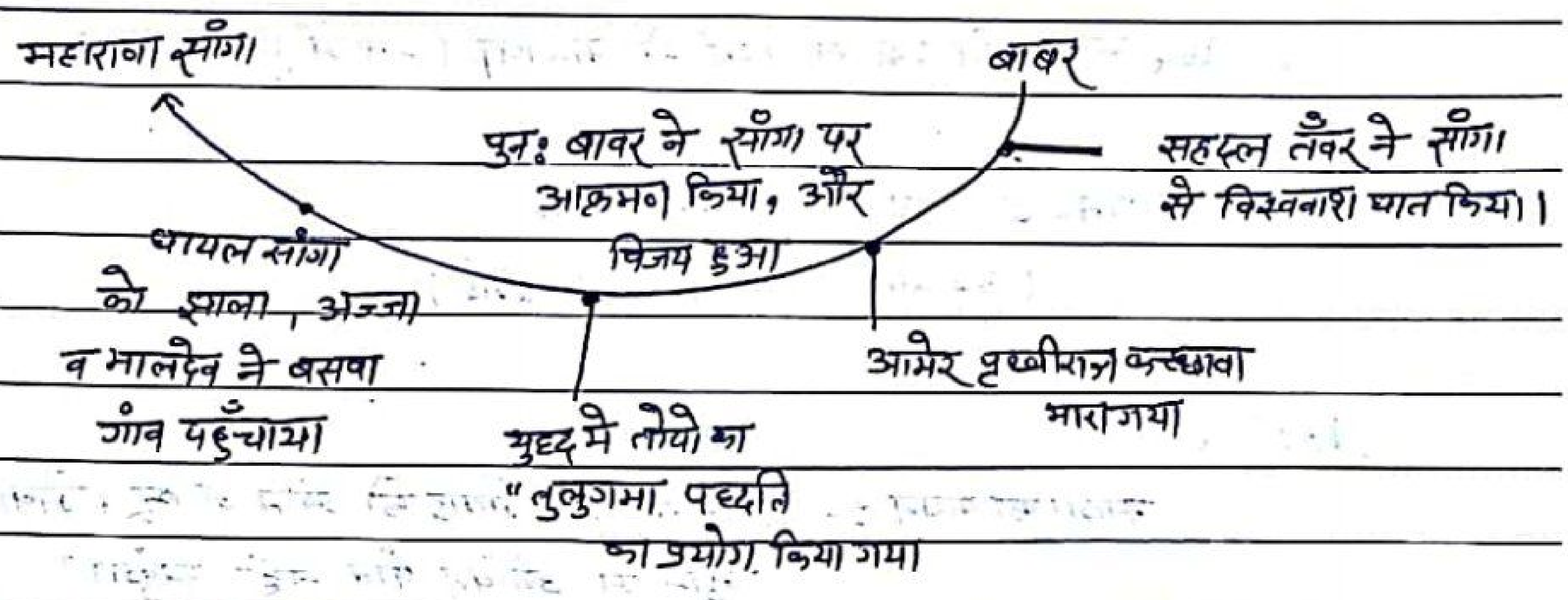

⇒ सांगा के युद्ध हारने के कारण

① – बयाना युद्ध के बाद युद्ध करने का समय ना मिलना।

② सहस्त्र तँवर द्वारा विश्वासघात करना।

③ तोपें
- तोपची मुस्तफा
- उस्ताद अली (का प्रयोग ईरानियों से सीखा)
  ↓
  काफिरों का वद्ध करने वाला

② 'तुलगमा पद्धति' :-
- ↳ सीखी → उजबेगों / मंगोलों से
- ↳ कुछ सामने से कुछ पीछे से वार करना।

बाबर ने गाजी की उपाधि धारण की

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

सांगा को घायल अवस्था में बसवा (दौसा) में झाला, अज्जा व मालदेव लाये

→ फिर से युद्ध की निति बनाने लगा।

→ युद्ध की निति देख साथियों ने कालपी (U.P में) 1528 में जहर दिया

→ मांडलगढ़ (भीलवाड़ा) — समाधि
(32 खम्भों की छतरी बनाई गई)

Note :-

सांगा का कथन :- "जब तक मैं मेवाड़ को जीत न लूँ, मेवाड़ की भूमि में जीवित पाँव नही रखुंगा"

बाबर नामा के अनुसार :-

"बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए दौलत खां लोदी, आलम खां लोदी और राणा सांगा ने निमंत्रण दिया, परन्तु इतिहासकार इस बात को असत्य मानते है।

खानवा युद्ध में महाराणा सांगा का साथ देने वाले राजा :-

- मारवाड़ — गंगा सिंह, बेटा — मालदेव
- बीकानेर — जैत सिंह
- आमेर (U.P) — अशोक परमार
- चन्देरी (गुजरात) — मेदिनीराय
- इब्राहिम का चचेरा भाई — महमूद लोदी
- मेवात — हसन खां लोदी
- सहलदी (सहदल) तंवर
↓
विश्वासघात किया।

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

Notes (सांगापुत्र)

⇒ रतन सिंह व विक्रमादित्य (1528 – 1537)

रतनसिंह :- (1528 – 31)

- राणा सांगा का बड़ा बेटा राजा बना।
- रतन सिंह 1531 में सुरजमल (बूंदी) राजा के साथ युद्ध में मारे गये।

विक्रमादित्य (1531 – 37)

- संरक्षिका → माँ रानी कर्मावती – 1534 में गुजरात के बहादुरशाह ने आक्रमण किया
  - → हुमायुं के पास राखी भेजी (1534)
    - → ने सैनिक सहायता नहीं दी
  - → पराजित हुई व जौहर किया
  - → (मेवाड़ का दूसरा जौहर) रानी कर्मावती

बनवीर (दासी पुत्र) – पृथ्वीराज की अवैध संतान → को मार दिया (विक्रमादित्य)

(भ्राता) पुत्र

बनवीर ने मारना चाहा → उदयसिंह

उदयसिंह
- → धायमाँ पन्ना ने अपने बेटे चंदन का बलिदान दिया
  - → त्याग व बलिदान की पहचान
- → को पन्ना धाय ने बचा लिया।
- → को कुम्भलगढ़ में शरण दी।

⇒ उदयसिंह (1537 – 72) :-

- → कुंभलगढ़ में राजअभिषेक (1537)
- → 1540 में बनवीर को मारकर चित्तौड़ पर विजय प्राप्त की।
- → 1544 शेरशाह सुरी की अधिनता स्वीकार की।
- → 1559 में उदयपुर बसाया
  - उदयसागर झील बनवाई।

www.EducationLib.com

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

1570 दिल्ली – बादशाह – अकबर → " सुलहकुल समझौता या दमननीति "

पुत्री हरकाबाई (जोधा) का विवाह अकबर से।
सांभर में आमेर राजा भारमल ने 1562 में अधिनता स्वीकार की अकबर की।

नागौर शासक जयमल को भी अधिनता के लिए बोला पर स्वीकार नही की

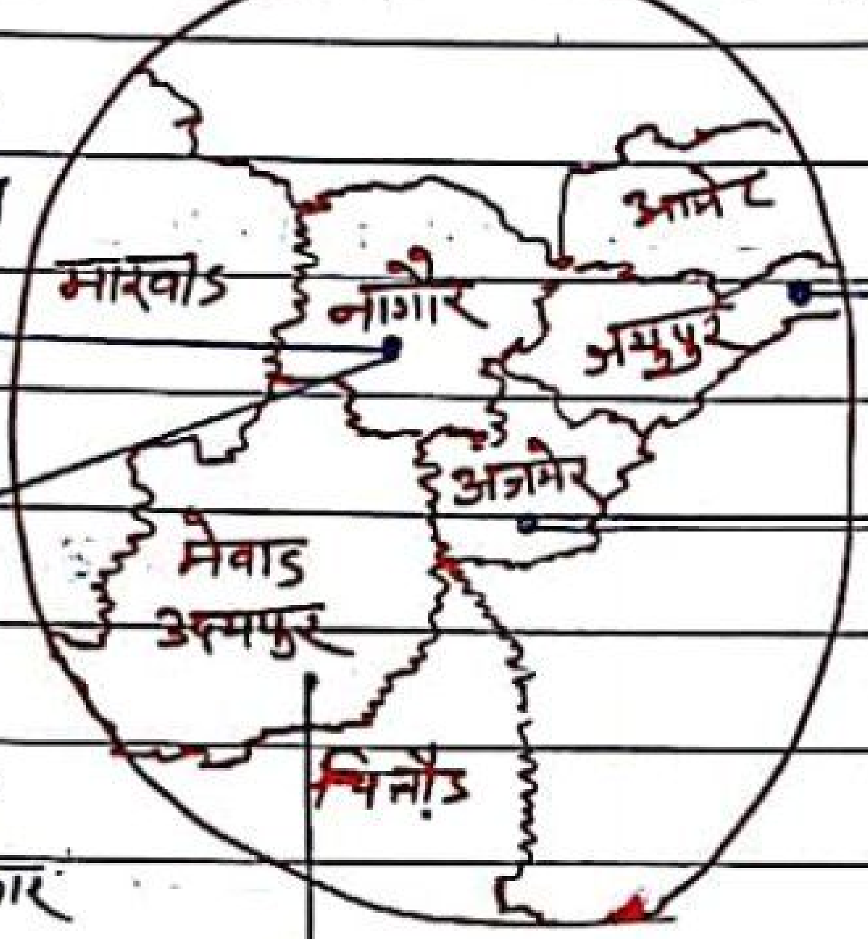

1562 में अकबर का नागौर पर अधिकार होगा

(जयमल गया रहा में)

(अकबर)
अकबर अजमेर ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह जा रहा था।

मेवाड
उदयसिंह (1537–72)

अकबर ने 1567 आक्रमण किया –
– फतेहनामा जारी किया – जीतनामा)
– कत्लेआम का आदेश (अमिट कलंक)

भाग गया
गोगुंदा (उदयपुर) गिरवा की पहाडी पर

(मुहर)
(जयमल व फत्ता) — मारे गये।
भतीजा
→ छतरी — आगरा — बनवाई – अकबर ने।

→ कल्ला जी — चारो हाथों के लोक देवता।
→ लडता हुये मारे गये
→ छतरी चित्तौडगढ़

→ रानीयों ने जौहर किया।
(मेवाड का तीसरा व अंतिम साखा)

28 फरवरी 1572 होली पर देहांत
(छतरी गोगुंदा)

* राज० में दोनो वीरो (जयमल व फत्ता) की मूर्ति जुनागढ़ (बीकानेर) में राय सिंह ने लगवाई।

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

Notes

PAGE NO.:
DATE: / /

उदयसिंह

छोटाबेटा → जगमाल
(मां — रानी धीरबाई भट्याणी)
↓
(उत्तराधिकारी बना)
↓
(सरदारों ने गद्दी से हटा दिया)
↓
(अकबर की शरण में चला गया)
↓
1583 में दत्ताणी के मैदान में मृत्यु

बड़ाबेटा → महाराणा प्रताप (कीका)
↓
मां — जैवन्ता बाई (अखैराज सोनगरा की पुत्री)
↓
9 मई 1540 जन्म कुम्भलगढ़
↓
बचपन का नाम कीका
↓
राज्याभिषेक (गोगुन्दा)
↓
कमर पर तलवार कुठा दस कठा में बांधी

⇒ महाराणा प्रताप (1572–1597) :-

- → राज्याभिषेक गोगुन्दा → जश्न – कुम्भलगढ़
- → अखैराज सोनगरा, रामसिंह (ग्वालियर) की मदद से महाराणा (राजा) बने।
- → छोटे भाई की जगह महाराणा बनने के कारण (राज महलों की क्रांति शुरू)
- → अकबर की अधीनता स्वीकार करने के लिए भेजा गया मंडल
  - जलाल खान (1572)
  - आमेर कुंवर मानसिंह (1573)
  - मानसिंह के पिता कुंवर भगवन्तदास (1573)
  - राजा टोडरमल (1573)

  — असफल रहे।

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

प्रताप के खिलाफ योजना बनाई
↓
मानसिंह व आसफखाँ
↓
Notes
अकबर के किला (मैगज़ीन का किला / दौलतखाना / शस्त्रागार / (अजमेर)

=> हल्दीघाटी का युद्ध (18, 21 जून 1576)

हल्दीघाटी / राजसंमद / गोगुन्दा की पहाड़ी / खमनौर की पहाड़ी / बनास नदी /

महाराणा प्रताप ⟷ मानसिंह

हल्दीघाटी युद्ध

को मुगल सेना से घेर लिया
↓
प्रताप को युद्ध से बाहर निकाला
↓
मुगल सैनिक पीछा कर रहे थे।
↓
भाई शक्तिसिंह ने मदद की और प्रताप को बचाया।

* बलीचा
↓
(बलीचा) गाँव में मिला वहीं (चेतक) का निधन।
↓ जानकारी
(1) अमरकाव्य वंशावली
(2) राज प्रशस्ति
↓ लेखक
रणछोड़ भट्ट
भाषा संस्कृत

— आसफखाँ ने युद्ध में जिहाद का नारा दिया
→ मीतरखाँ ने अकबर के आने की झूठी खबर फैलाई।

→ युद्ध जारी

↓
कमान संभाली
(1) झाला बिदा
(*) (2) हकीम खाँ सूरी
↓
(एकमात्र मुस्लिम शासक जो प्रताप की ओर से लड़ा)
↓
मारे गये
(मकबरा — खमनौर)
| युद्ध बाद
→ अकबर, 1576 में मेवाड़
(उदयपुर पर आक्रमण किया
कब्जा कर लिया।
(नाम रखा → मोहम्मदाबाद)

मानसिंह से नाराज होकर मन सबदारी छीन ली।

↓
पुंजा भील
(भील सेना के नेतृत्व करने वाले एकमात्र शासक)

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

Notes

PAGE NO.:
DATE: / /

हल्दीघाटी का सजीव वर्णन →

① अब्दुल कादिर बदायुनी – ग्रंथ – मुन्तखाब-उल-तवरिख

→ हल्दीघाटी युद्ध को "गोगुन्दा का युद्ध कहा"

② अबुल-फजल → ग्रंथ → अकबरनामा

→ "खमनौर का युद्ध" कहा

③ कर्नल जेम्स टॉड — मेवाड़ की थर्मोपल्ली कहा

⇒ महाराणा प्रताप को पकड़ने के लिए किये गये प्रयास

1577 → शाहबाजखां
1578 → शाहबाजखां — असफल रहा
1579 → शाहबाजखां

* " चुलिया गाँव में भामाशाह ने महाराणा प्रताप की आर्थिक सहायता की।

हल्दीघाटी के बाद महाराणा प्रताप की स्थिति नाजुक हो गई।

→ कुंभलगढ़ में शरण ली।

→ ने छापामार व गुरिल्ला पद्धति अपनाई

→ को आर्थिक सहायता की – पाली निवासी – भामाशाह
— मेवाड़ का रक्षक
— मेवाड़ का दानवीर
— मेवाड़ का उद्धारक

→ पुनः सेना का गठन किया।

Note

प्रताप → चूणा – चावण्डिया — राजधानी – चावण्ड (उदयपुर)
→ को आक्रमण किया।
→ राजधानी चावण्ड को बनाई

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

दिवेर युद्ध, 1582

"कर्नल टॉड — मेवाड़ का मेराथन"

महाराणा प्रताप
↓ की तरफ से बेटा
अमरसिंह I

अकबर
↓ की तरफ से
सुल्तान (सेनापति)

भाले से मारकर हत्या कर दी।
अमरसिंह I विजयी रहा।

दिवेर विजय
"प्रताप के गौरव का प्रतीक"

युद्ध में धापामार व
गुरिल्ला पद्धति
अपनाई अमरसिंह ने।

- अकबर ने प्रताप को समझाने के लिए अंतिम बार जगन्नाथ कच्छावाहा को 1584 में भेजा लेकिन ~~सफ~~ असफल रहा।
- इसके बाद अकबर ने प्रताप पर आक्रमण करना बंद कर दिया। इसे अघोषित संधि कहते हैं।
- महाराणा प्रताप केवल चित्तौड़गढ़ व कुमलगढ़ पर विजय नहीं पा सके।
- 1585 में प्रताप ने लूना चावंडिया पर आक्रमण कर दिया। तथा चावंड को राजधानी बनाया।
- 19 जनवरी 1597 में प्रताप की मृत्यु चावंड में हुई।
- इनका दाह संस्कार बान्डोली (उदयपुर) में किया। जहां 8 खम्भों की छतरी बनी हुई है।
- चेतक का चबूतरा हल्दीघाटी में है।

www.EducationLib.com

Notes

PAGE NO.:
DATE: / /

⇒ अमरसिंह I (1597–1620)

अमरसिंह I — अकबर का बेटा (अकबर की मृत्यु 1605)

(1620–मृत्यु) — कर्णसिंह (1620–28) पुत्र — सलीम (जहाँगीर)

↓ सेनापति — खुर्रम / शाहजहाँ (पुत्र जहाँगीर) — खानखाना

1615 में मेवाड़ – मुगल संधि

शर्तें :– राणा कभी दरबार में नहीं आयेगा

② चित्तौड़गढ़ दुर्ग की मरम्मत नहीं करवायेगा

③ शादी– संबंध नहीं होंगे।

Note – इसी संधि के लिए कर्णसिंह (पुत्र अमरसिंह I) मेवाड़ का एकमात्र शासक था जो मुगल शासक (अकबर / जहाँगीर) के दरबार में गया था व मुगलों की मनसबदारी प्राप्त की।

– आमेर किले में कर्णसिंह व अमरसिंह की मूर्तियाँ जहाँगीर ने लगवाई।

⇒ जगतसिंह प्रथम (1628–1652)

सपनों में बना मंदिर
↓
– पिछोला झील में जग मंदिर का निर्माण करवाया।
– शाहजहाँ के समकालीन राजा था।
– जगन्नाथ प्रशस्ति — कृष्ण दास।

⇒ राजसिंह (1652–1680) :–

– राजसिंह के समकालीन मुगल बादशाह – औरंगजेब
– राजसमंद झील का निर्माण करवाया। (इसकी बड़ी कृत्रिम झील)
– उत्तरी भाग को नौ चौकी की पाल बनाया।
– संस्कृत में 25 शिलालेख — राजप्रशस्ति
↓
लेखक – रणछोड़ भट्ट

1. ... इतिहास की जानकारी — एशिया की सबसे बड़ी प्रशस्ति ←

Scanned with CamScanner

Notes

राजसिंह द्वारा बनवाये गये मंदिर

1. अम्बेमाता मंदिर – उदयपुर
2. द्वारिका धीश मंदिर – कांकरोली (राजसमंद)
3. श्रीनाथ जी का मंदिर – नाथद्वारा (राजसमंद)
   - ↳ मंदिर निर्माण के समय राजसमंद का नाम – सिहाड़
   - सप्त ध्वजों का भगवान
   - श्रीनाथ जी की पिछवाईयां प्रसिद्ध हैं।

दिल्ली बादशाह औरंगजेब → विवाह करना चाहा → किशनगढ़ राजकुमारी चारुमती

महाराणा राजसिंह → मना किया, विरोध किया → किशनगढ़ राजकुमारी चारुमती

↓ परिणाम

(1) औरंगजेब ने जजिया कर लगा दिया – राजसिंह ने विरोध किया।
(2) औरंगजेब ने मंदिर तुड़वाने के आदेश दिये।
(3) औरंगजेब के विद्रोही – दुर्गादास को राजसिंह ने शरण दे रखी थी।

⇒ अजयसिंह / जयसिंह I 1680 – 1698)

जयसमंद झील का निर्माण
- ↳ गोमती नदी पर
- ↳ प्राचीन नाम – ढेबर झील (उदयपुर)
- → राज० की सबसे बड़ी मीठे पानी की झील
- → सात टापू स्थित हैं।
- → झील का बड़ा टापू "बाबा का भागड़", छोटी "प्यारी"
- 2 नहरें – अतः प्रवाह झील।
  - श्यामनहर
  - भाटनहर

www.EducationLib.com

Notes

PAGE NO.: DATE: / /

⇒ अमरसिंह II (1698–1710) :-

– इसने अपनी पुत्री चंद्रा कुंवारी का विवाह आमेर के राजा सवाई जयसिंह से करवाया।

⇒ संग्रामसिंह II (1710–1734)

1700–1743 – आमेर सवाई जयसिंह

मेवाड संग्रामसिंह II (सहेलियों की बाड़ी का निर्माण करवाया)

अध्यक्ष बनाया

जनवरी 1734 मृत्यु

↓ मंदसौर के युद्ध (M.P) में मराठों से पराजित

मराठों के विरुद्ध योजना हुरडा सम्मेलन (भीलवाड़ा) 17 जुलाई 1734

⇒ बेटा जगतसिंह II (1734–1778)

अध्यक्षता की – सम्मेलन असफल रहा।

⇒ भीमसिंह सिसोदिया :- (कृष्णा कुंवारी विवाद)

मेवाड — मारवाड

भीमसिंह सिसोदिया — भीमसिंह राठौड़ → मृत्यु होगई

पुत्री – कृष्णा कुंवारी

सगाई होगई

↓ भाई

मानसिंह — आमेर

सगाई करना चाहा — जगतसिंह चाहता।

युद्ध

| सेनापति

भीमसिंह ने सगाई करदी।

जहर दिया

आमीरखां पिंडारी

अमीरखां पिंडारी (1817 – टोंक बसाया)

गींगोली युद्ध 1807 (परबतसर – नागौर)

Note ✱ भीमसिंह ने 1818 में ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ संधि कर ली और मेवाड में राजपूताना युग का खात्मा हुई।

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

रणथम्भौर का इतिहास

Notes

PAGE NO.: DATE: / /

रणथम्भौर में चौहान वंश की स्थापना → गोविन्द राज ने, 1194 ई० में

सबसे प्रसिद्ध व प्रतापी शासक – हम्मीर देव चौहान — जानकारी मिली।

पिता – जयसिंह 32 वर्ष शासन

की याद में 32 खम्भों की छतरी बनवाई

1. हम्मीर काव्य – नयन चन्द्र सुरी
2. हम्मीर हट्ट – चन्द्रशेखर
3. सुर्जन चरित्र – चन्द्रशेखर
4. हम्मीर रासो – सांरगधर 13वीं शता
5. हम्मीर रासो – जोधराज – 19वीं शताब्दी

समकालीन – दिल्ली सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी (1290–1296 ई०)

→ हम्मीर पर दो बार आक्रमण किये 1291 व 1292

→ दोनों बार असफल

→ ने कहा "रणथम्भौर के दुर्ग को मुसलमानों के बाल बराबर भी नहीं समझता",

→ की हत्या भतीजे व दामाद अलाउद्दीन खिलजी ने 1296 में कर दी

के हम्मीर देव पर आक्रमण करने के कारण →

1. हम्मीर देव ने कर देने से मना कर दिया था
2. अलाउद्दीन खिलजी की निति साम्राज्य वादी थी।
3. चाचा की हार का बदला लेने की चाह।
4. मंगोल विद्रोही महम्मद शाह को हम्मीर ने शरण दे रखी थी

(Boyfriend ~~wife of the~~ of the ~~A.K.~~ A.K. wife (मराठा बेगम))

Boyfriend of the A.K. Wife (Maratha Begam)

अलाउद्दीन खिलजी v/s हम्मीरदेव

अलाउद्दीन खिलजी	हम्मीरदेव
सेनापति भेजे	सेनापति भेजे
– नुसरत खां	– भीमसिंह
– उगलू खां	– धर्मसिंह

परिणाम

A.K. ~~सेनापति~~ ने

"रणथम्भौर की कुन्जी" कहे जाने वाले दुर्ग → झाइन/छायन/थान दुर्ग पर कब्जा।

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

Notes

PAGE NO.: DATE: / /

1301 में स्वयं ने आक्रमण किया

↓

अलाउद्दीन खिलजी — हम्मीर देव – चौहान

लालच दिया (गुप्त रास्ते बताये) — सेनापति

मार दिया

धोखा दिया हम्मीर को

- रणमल
- रतिपाल

रसोईया

- सुरजन शाह

"A o K ने महमूद शाह को हाथी के पैर से कुचला दिया"

↓

परिणाम

- हम्मीर देव लड़ते हुए मारा गया।
- रानी रंग देवी व पुत्री देवल दे ने जौहर किया।

↓ जल

* राजस्थान का प्रथम जौहर

{ समूह मे रानीयों के आग या जल को समर्पित घटना — जौहर ½
राजा व सैनिक सिर पर धारण करते साफा रंग — केशरिया ½ }

* केशरिया + जौहर = शाका

एक ओर से किये हुऐ कार्य को अर्द्ध साका कहते हैं।

Note :- जैसलमेर के 2½ (ढाई) शाके प्रसिद्ध हैं।

- लूणकरण ने केशरिया किया।
- रानियों ने जौहर नही किया।

जैसलमेर

(1) पहला शाका अलाउद्दीन खिलजी के (1296-1316) के आक्रमण के दौरान

(2) दूसरा शाका फिरोज तुगलक के (1351-1388) के आक्रमण के दौरान।

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

3. जालौर का इतिहास :-

PAGE NO.:
DATE: / /

- जालौर का प्राचीन नाम — जाबालीपुर — आरम्भ में शासन किया — प्रतिहारो ने — कन्नौज चले गये,
  - में चौहान वंश की स्थापना — 1182 में कीर्तिपाल ने।
  - उपाधि — किंतु → एक महान राजा।

प्रसिद्ध शासक (कान्हड़देव) 1305-1311

जानकारी → कान्हड़देव प्रबंध → लेखक — पद्मनाभ

→ दी मुहणोत नैणसी
→ जोधपुर के जसवंत सिंह के दिवान।
→ ग्रन्थ —
- मारवाड़ रा परगना री विगत
- मुहणोतं नैणसी री ख्यात → अर्द्ध-वात

राजपुताना का अबुलफज़ल — उपाधि दी।

जयपुर निवासी → मुंशी देव प्रसाद →
- कानुन की माता
- इनकी के कहने पर Raj-एकीकरण का नाम "मत्स्य संघ" रखा।

जालौर — कान्हड़देव सोनगरा चौहान

दिल्ली सुल्तान — अलाऊद्दीन खिलजी (1296-16)

ने 1305 सेनापति एन-उल, मूल्क-मुल्तानी को भेजा।

↓ परिणाम
- आपसी समझौता हुआ
- ने अपने पुत्र वीरमदेव को A.o.K के दरबार में रखा
  ↓
  Daughter [redacted] of the A.o.K. (फिरोजा) was gf of Veermdev
  ↓
  उठा ले गया वीरमदेव

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

⇒ (1308)

अलाऊद्दीन खिलजी (की तरफ से) → सेनापति कमालुद्दीन गुर्ग

कान्हड़देव की (की तरफ से) → भतीजा शीतल देव चौहान

लालच दिया और मार दिया → भावला सरदार ← धोखा दिया

शीतल देव लड़ता हुआ मारा गया

→ 1308 मे पुन A.K ने आक्रमण के लिए भेजा → सीवाणा दुर्ग

बाड़मेर – गिरी दुर्ग

स्थापना – वीर नारायण पंवार

उपनाम → "मारवाड़ के राजाओं की शरण स्थली"
"जालोर दुर्ग की कुंजी"

↓

परिणाम

– सिवाणा दुर्ग का नाम बदल कर "खैराबाद" रख दिया।

⇒ (1311 मे युद्ध)

कान्हड़देव → A.K सेना ने मार दिया (भागी हुई गई परन्तु देर होगई)

जालोर

वीरमदेव

युद्ध बाद नाम बदला (जलालाबाद)

A.K सेनापति कमालुद्दीन गुर्ग

क्षत्रिया (स्वामी भक्त) ने मार दिया ↔ ने बताया पति को

को लालच दिया → बीदहिया राजपूत (गुप्त रास्ते बताये)

A.K ने फिरोजा की याद मे बनाई मस्जिद –
{तोप मस्जिद
फिरोजा मस्जिद}

1311 मे आक्रमण किया

↓

परिणाम

• A.K सेनापति की जीत हुई।

→ ने कुलदेवी "आशापुरा के सामने आत्महत्या कर ली

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

4. बीकानेर का इतिहास :-

PAGE NO. :
DATE : / /

Notes

स्थापना :- राव जोधा के पांचवें पुत्र (राव बीका) ने अपनी माता के आशीर्वाद से जांगल प्रदेश में राठौड़ वंश की स्थापना → 1465 ई० में

↓ 23 वर्ष बाद

1488 में राव बीका जी ने बीकानेर की स्थापना की।

आखा तीज / अक्षय तृतीया / वैशाख शुक्ल तृतीया

↓

अबूझ सावा (सबसे ज्यादा बाल विवाह होते हैं।)

⇒ लूणकरण :- (1504 – 1526)

⇒ ग्रंथ राव जैतसी रो छंद — भाषा → डींगल भाषा

↓

लेखक — बीठू राजा

↓

ने सर्वप्रथम लूणकरण को 'कलयुग' का कर्ण कहा।

कर्मचन्द्र वंशोत्पन्नम् में भी 'कलयुग का कर्ण' कहा।

⇒ जैतसिंह (1526–1542)

↳ ने खानवा के युद्ध 1527 में राणा सांगा का साथ दिया।

हुमायूं के भाई

↓

कामरान ⟷ जैतसिंह

↓

विजय हुआ — भटनेर (हनुमानगढ़) का युद्ध (1534) ई० में

जैतसिंह की हत्या मालदेव के सेनापति जैता व कूपा ने पहोबा का युद्ध में की।

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

Notes 1544-(74)

PAGE NO.:
DATE: / /

⇒ कल्याणमल :- (1544-74)

→ 1544 ई० में शेरशाह सूरी की अधिनता स्वीकार की।
→ गिरि सुमेल के युद्ध में (1544) ई० शेरशाह सूरी का साथ दिया।
→ ~~1540~~ 1570 में नागौर दरबार में अकबर की अधिनता स्वीकार करते हुए कल्याणमल ने दोनों पुत्रों की नियुक्ति ~~अस्बर~~ अकबर के दरबार में की।
① पृथ्वीराज राठौड़ ② रायसिंह

- अकबर के ~~नौ~~ नवरत्न में से एक था।

- पृथ्वीराज राठौड़ ने → झालावाड़ → गागरोण दुर्ग में → बैठकर → डींगल भाषामें ग्रंथ लिखा
↓
① वेलिकिसन रुकमणी री ख्यात ग्रंथ

सत्रम राज० साहित्य के पितामह
पाथल व पीथल के रचनाकार :- कन्हैयालाल सेठिया
निवासी- सुजानगढ़ (चूरू)

↓
दोपात्र
↓
पाथल (महाराणा प्रताप) — पीथल (स्वयं)

" कर्नल टॉड ने पढ़ा और कहा "प्रताप ने अकबर की अधिनता स्वीकार की" लेकिन इतिहासकार इसे गलत मानते है।

② गंगा लहरी :- भाषा → डींगल
↓ (इटली निवासी)
- डॉ टेस्सीटोरी ने पृथ्वीराज राठौड़ को "डिंगल का हैरोस" कहा।
- ↓ ने बीकानेर में रहकर — रासो साहित्य पर शोध किया।
→ देहांत बिकानेर में ही हुआ।
→ की स्मारक महाराजा गंगासिंह ने करवाया।
↳ राज० राज्य अभिलेखागार के समीप बीकानेर।

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

:- **रायसिंह** ⇒ (1574–1612)

→ दो मुगलों के समकालीन → (1) अकबर (2) जहाँगीर
→ 1572 में अकबर ने जोधपुर का सूबेदार बनाया।
→ को मुंशी देवी प्रसाद ने राजपूताने का कर्ण कहा।
→ ने जूनागढ़ दुर्ग की स्थापना बीकानेर में की।
↓ नींव चूने से भरी गई।
→ दुर्ग के सामने जयमल व फत्ता की मूर्ति लगवाई।
→ 1612 ई० में एलिचपुर (दक्षिणी भारत) में देहांत हो गया।
→ अकबर का मानसिंह के बाद दूसरा बड़ा विश्वासपात्र।
→ जहांगीर का सबसे बड़ा विश्वासपात्र।

⇒ **कर्णसिंह** (1631–1669) :-

→ को राजपूतों ने "जांगलधर बादशाह" की उपाधि दी।
→ के समय साहित्य कल्पद्रुम की रचना हुई
↓
रचनाकार → गंगानंद मैथिली

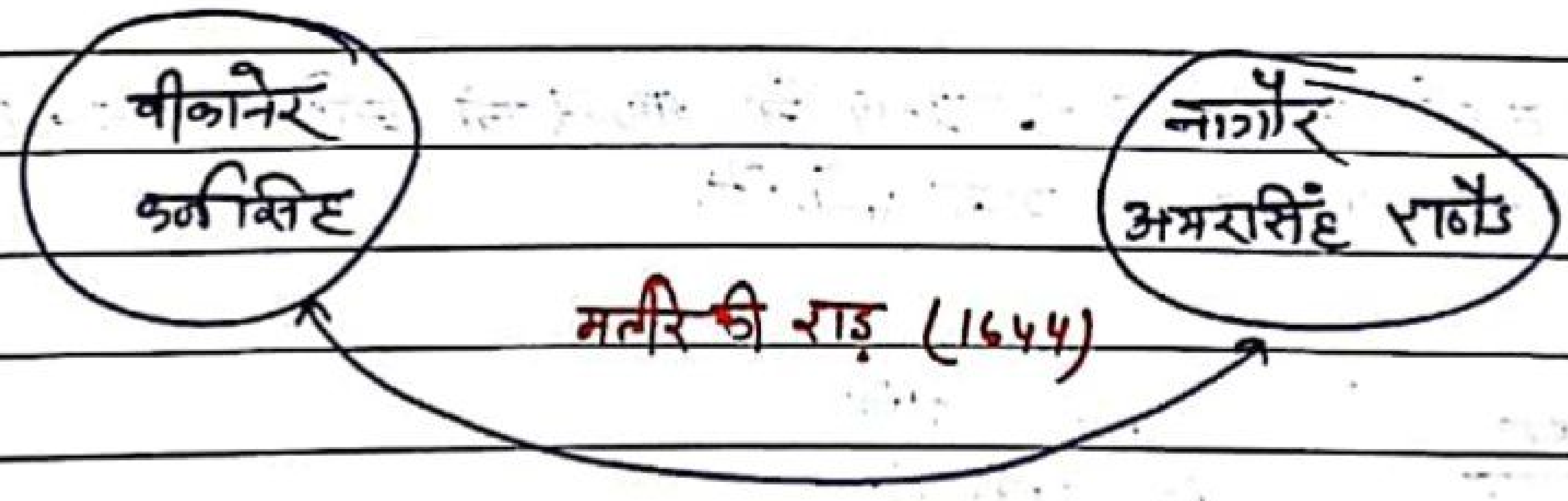

- देशनोक (बीकानेर) में "करणी माता के मंदिर" का निर्माण करवाया

अनूपसिंह :- औरंगजेब ने महाराजा व माही भारती का पद दिया
(1669–1698)

सूरतसिंह :- 1818 में ईस्ट इंडिया कम्पनी से समझौता किया।

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

Notes

PAGE NO.:
DATE: / /

सरदार सिंह :-

1857 की क्रांति का एक मात्र शासक जिसने अंग्रेजों की सहायता हेतु राजस्थानी सेना को राज० स्थान से बाहर भेज कर मदद की।

गंगासिंह

→ ने अपने पिता लालसिंह की याद में "लालगढ़ पैलेस" बनवाया।

→ गंगनहर बनवाई

→ राजस्थान की प्रथम व प्राचीन नहर।

→ "राजस्थान की भागीरथ"

→ का निर्माण 1922–27 ई० में

www.EducationLib.com

शार्दुल सिंह :-

→ के समय में बीकानेर में पहली खेल स्कूल की स्थापना की

↓

सार्दुल स्पोर्ट स्कूल – बीकानेर

{ – Raj का दूसरा शार्दुलसिंह विद्यालय सीकर में खोला गया।
– Raj में खेल विश्वविद्यालय झुंझुनू में खोला जा रहा है। }

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

5. अजमेर का इतिहास

Notes

PAGE NO. : DATE : / /

→ चौहान वंश की स्थापना → 551 ई० में वासुदेव / आदिपुरुष → साम्राज्य → सांभर झील / सपादलक्ष के पास बसाया था।

(जानकारी)

→ बिजौलिया शिलालेख (भीलवाड़ा) → के अनुसार → सांभर का निर्माता — वासुदेव

– में कुलदेवी शाकम्भरी माता का मंदिर बनवाया। अहिच्छत्रपुर (नागौर) को राजधानी बनाया।

1113 — अजयराज ने अजमेर बसाया

– अजमेरु दुर्ग का निर्माता

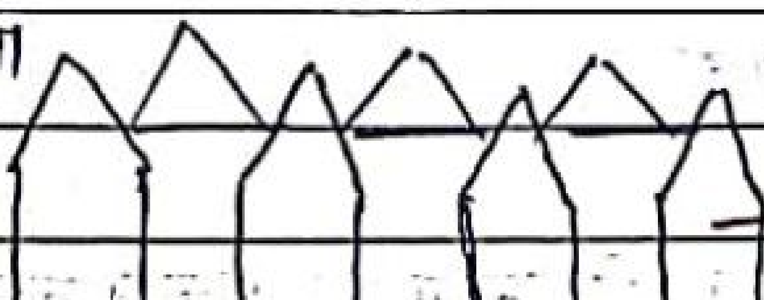

(प्राचीन नाम — गढबीठली)

अजमेरु दुर्ग → वर्तमान में → तारागढ़ → नाम → मेवाड़ के राजकुमार ने रखा

– पृथ्वीराज सिसौदिया → तेज धावक / उड़ना राजकुमार

घरवाली का नाम → तारा

दुर्ग की मरम्मत करवाया। → तारागढ़

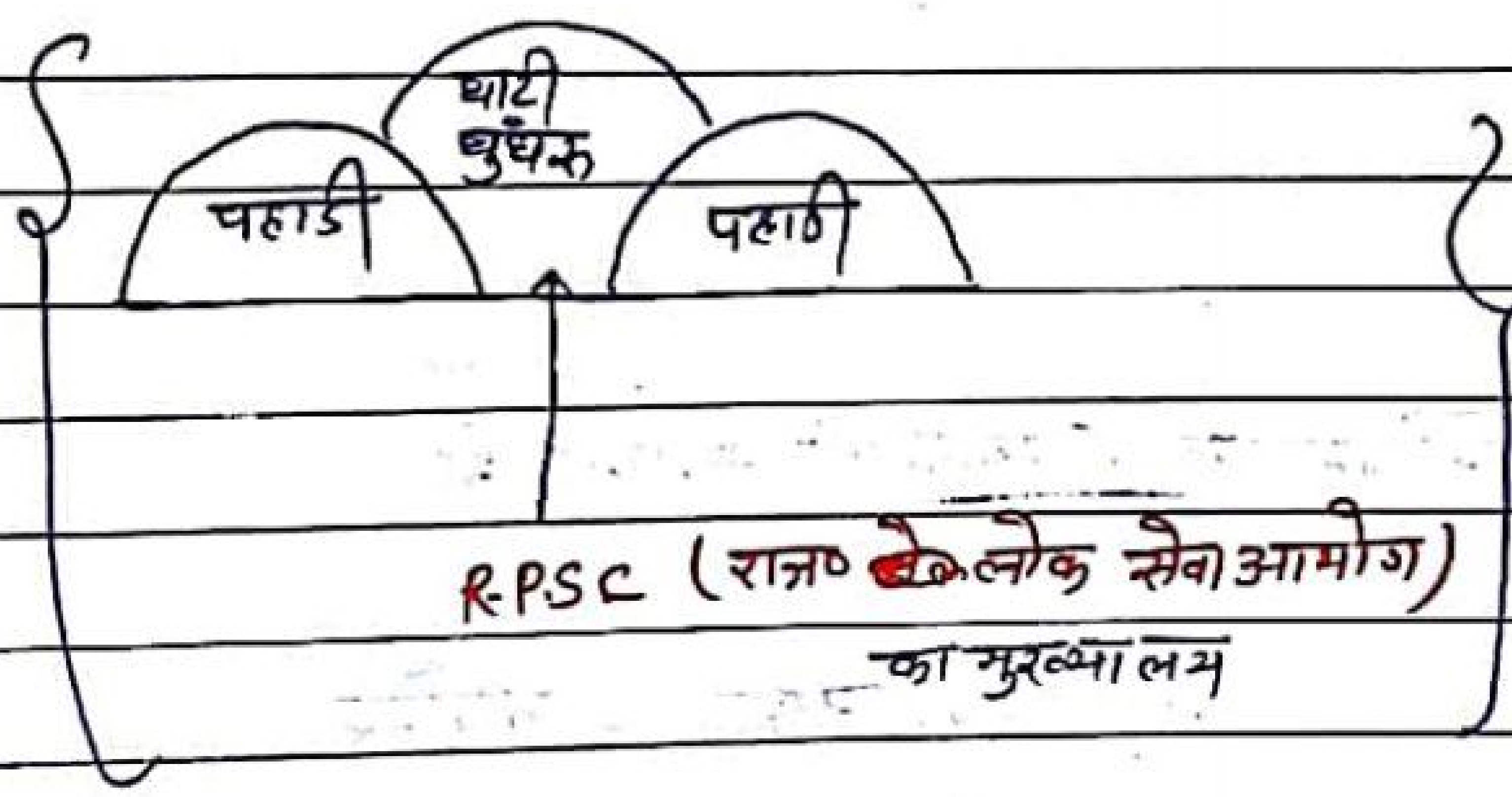

RPSC (राज० लोक सेवा आयोग) का मुख्यालय

⇒ अर्णोराज / आनाजी (1133) → आनासागर झील (अजमेर में बनवाई) → किनारे — जहांगीर ने — दौलत बाग बनवाया → वर्तमान → सुभाष उद्यान

→ ने पुष्कर में आदि-वराह मंदिर बनवाया।

— बेटा — जगदेव → पितृ हन्ता।

(दोनों को मां राजपूत थी)

– शाहजहां → बारहदरी बनवाई (12 छतरियां) → बैठने का स्थान

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

⇒ विग्रहराज-चतुर्थ / विसलदेव (1153 ई०)

→ कवि था → उपाधि → कवि बान्धव → कण्ठाभरण।
विद्वान था → स्वयं ने नाटक लिखा → (हरिकेली)

→ विद्वानों को आश्रय दाता था।
· दो विद्वान (1) सोमदेव → ललित विग्रहराज ग्रंथ लिखा।
(2) नरपति नाल्ह → विसलदेव रासो लिखा।

→ बिसलपुर सागर बनवाया (वर्तमान मे टोडारायसिंह-टोंक)
- अजमेर में संस्कृत पाठशाला का निर्माण करवाया

↳ तोड़दिया → कुतुबुद्दिन ऐबक ने।
- अढ़ाई दिन का झोंपड़ा - अजमेर बनाया।
- राजस्थान की प्रथम मस्जिद थी।
- 2½ दिन का उर्स मेला

↳ पंजाब शाह संत की याद में

→ ने दिल्ली के तोमरों को पराजीत किया।
→ साम्राज्य अजमेर से दिल्ली तक फैलाया।
→ का काल - चौहानों का स्वर्णयुग / क्लासिक युग

~~सोमेद~~ सोमदेव की अचानक मृत्यु के बाद शासक बना पृथ्वीराज-चौहान III।

⇒ पृथ्वीराज-चौहान III (1177 ई०)

↳ 11 वर्ष की आयु ← राज्याभिषेक, संरक्षिका माँ - कर्पूरी देवी
→ ने "दिग्विजय की नीति" अड़ौसी-पड़ौसी को पराजित कर अधिनता स्वीकार
→ ने 1182 में महोबा के युद्ध (U.P) में परमर्दिदेव-चंदेल को पराजीत किया।
→ ने -पन्चेरे भाई - नागार्जुन को पराजित किया।
→ ने गुजरात के भीम IInd को पराजित कर दिया।
→ कन्नौज के शासक - जयचंद गहड़वाल → पुत्री - संयोगिता - उदाहरण

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

- भारत में खतरे के बादल मंडराने लगे थे → मोहम्मद गोरी के नेतृत्व में।
- गौरी का मुल उद्देश्य भारत में मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना करना था।

⇒ तराइन का प्रथम युद्ध, 1191 (हरियाणा)

सम्राट पृथ्वीराज चौहान III ने गौरी को छोड़ दिया। → मोहम्मद गोरी

गौरी ने आक्रमण किया और हार गया

मोहम्मद गोरी ↳ की भारत की दूसरी हार हुई
प्रथम हार → 1178 मुलराज II से आबू / अहिलवाड़ा का युद्ध में हुई

⇒ तराइन का (हरियाणा) द्वितीय युद्ध, 1192

पृथ्वीराज चौहान III ← गौरी ने बंदी बनाया और अंधा कर दिया। ← मोहम्मद गोरी

गौरी ने पुन आक्रमण किया और पृथ्वीराज हार गया।

1194 —
- के बाद तक अजमेर का कार्यभार कुतुबुद्दिन ऐबक को सौंपा।
- तक अजमेर का कार्यभार पृथ्वीराज III के पुत्र गोविन्दराज को सौंपा।

- पृथ्वीराज III ने अजमेर में कला साहित्य विभाग की स्थापना की → अध्यक्ष → पद्मनाभ।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

Notes

PAGE NO.: DATE: / /

पृथ्वीराज चौहान III के दरबार में अनेक कवि थे।

→ ① नागीश्वर

→ ② जनार्दन

→ ③ जयानक भट्ट — ग्रन्थ — पृथ्वीराजविजय

→ में तराइन के युद्ध का वर्णन नहीं किया।

→ ④ चन्दरबरदाई — ग्रन्थ → पृथ्वीराज रासो

→ में तराइन युद्ध का वर्णन किया।

" चार बास चौबिस गज
अंगुल अष्ट प्रमाण
ता ऊपर बैठ्यो सुल्तान
मत चूके चौहान" • उक्त पंक्तियों का वर्णन इसी ग्रंथ में मिला।

⇒ ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती

→ जन्म — संजरी, फारस (ईरान)

→ मोहम्मद गोरी के साथ भारत आया। पृथ्वीराज चौहान III के काल में।

→ की दरगाह — इल्तुतमिश ने बनवाई

→ गुलामों का गुलाम

दुनिया का दूसरा मक्का मदीना

→ में दो देग (कढ़ाईया)

- बड़ी देग → अकबर
- छोटी देग → जहाँगीर
- मस्जिद → शाहजहाँ

→ चिश्ती संत धन संग्रह नहीं करते थे इसलिए गरीब नवाज / फकीर कहलाये

→ उर्स / मेला — 1 रज्जब से 6 या 9 रज्जब तक

उद्घाटन → भीलवाड़ा निवासी — गौरीपरिवार

→ " साम्प्रदायिक सद्भावना के प्रतीक "

Scanned with CamScanner

6. मरु/मारवाड़ का इतिहास

Notes

PAGE NO.:
DATE: / /

मरु — मारवाड़ — आरम्भ में शासन किया — प्रतिहारों ने — चले गये — कन्नौज

बदांयु (कन्नौज) से — 13वीं शताब्दी में आगमन — राजपुत राठौड़ों की गौत्र का

राव सीहा राठौड़ ने पाली के आस-पास (1240ई०) में राठौड़ वंश की स्थापना की।

वंशज → राव-चुडा — ने मंडोर का राजधानी बनाया।

वंशज → रणमल राठौड़ — बहन हंसाबाई — विवाह — मेवाड़ शासक लाखा

पुत्र → मोकल → पुत्र → महाराणा कुंभा

महाराणा के कहने पर भारमली ने जहर दिया (रणमल राठौड़ को)

वंशज — राव जोधा पुत्र

→ राव जोधा — फरार — मेवाड़ से — पहुँचा — मंडोर
(1438-89)

- 1459 जोधपुर शहर का निर्माण
- मेहरानगढ़ (मोरध्वज) का दुर्ग बनवाया
- नींव रखी रिद्दी बाई / करणीमाता
- राज० का एकमात्र प्राचीन विश्वविद्यालय — जयनारायण व्यास विश्व विद्यालय जोधपुर में स्थित है।

आंवल — बांवल संधि (1458 ई०)
- करवाई — हंसाबाई ने।
- मेरवाड़ा की पहाड़ियों पर
- संधि में मेवाड़ व मारवाड़ की सीमाओं का निर्धारण हुआ।

⇒ राव गांगा जी / राव मालदेव (1531-1562) — पितृहंता

↳ - 1531 में मृत्यु

- 1527 में खानवा के युद्ध में राणा सांगा का साथ दिया दोनों ने।

www.EducationLib.com

मालदेव (1531ई० से 1562ई०)

— फारसी इतिहासकारों ने (हशमत वाला) शासक कहा।
(शक्तिशाली)

मारवाड़ शासक मालदेव → बीकानेर शासक जैत सिंह

पाहेबा/साहेबा का युद्ध (फलौदी) 1540-41

जैत सिंह — मारा गया

मालदेव विजय → जैता व कूंपा सेनापति के नेतृत्व में।
— बीकानेर पर अधिकार हो गया।

→ निर्माता
- पोकरण का किला — जैसलमेर
- सोजत का किला — पाली
- मालकोट का किला — मेड़ता नागौर
- अजमेर के तारागढ़ पर भी अधिकार था।

— 1539ई — 1540ई०

हुमायुं ← शेरशाह सूरी

हुमायुं — हार गया

चौसा (यू०पी०) का युद्ध 1539

कन्नौज / बेलगांव का युद्ध 1540
↓
इस युद्ध में शेरशाह सूरी के डर से हुमायुं भाग गया।

हुमायुं → सहायकता मांगी → मालदेव
- न बेदी
- न सहायकता

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

Notes

PAGE NO.:
DATE: / /

जनवरी 1544, गीरी सुमेर का युद्ध

मालदेव → सेनापति – जैता व कूंपा → मारे गये।

मालदेव → हार गया

(मालदेव ने शेरशाह को नमाज पढ़ने के लिए मजबूर कर दिया।) → शेरशाह सुरी

शेरशाह सुरी → बाद में → सेनापति जलाल खाँ जुलानी सेना लेकर आया

गिरी सुमेर का युद्ध 1544

पाली (जैतारण)

"मुट्ठी-भर बाजरे के खातिर हिन्दुस्तान की बादशाहत खो बैठता" ← बोला ← शेरशाह हारते-हारते जीता गया

- 1545 में कालिंजर अभियान के तहत मृत्यु हो गई।
→ का मकबरा – बिहार (सिरसाराम)

मालदेव
→ मेरिच्चाटिय के समय मेवाड़ की रक्षा के लिए सेना भेजी।
→ उदयसिंह को बचाने के लिए जैता व कूंपा को भेजा।
→ 1562 में मृत्यु

विवाह हुआ

⊛ उम्मादे (रूठी रानी)
→ उम्मादे – रूठकर तारागढ़ (अजमेर) चली गई।
→ को मनाने के लिए भेजा – ईश्वरदास बारहठ
→ फिर भेजा रानियों को → दोहा सुनाया – उम्मादे नही मानी

(महासती हुई)
↳ "पति के निशान चिन्ह को लेकर मरना"

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

फैसले से नाराज – हुसैन कुली खां से मिला।

Notes

PAGE NO.:
DATE: / /

मालदेव मृत्यु (1562 ई०) — पुत्र → 1. राम सिंह — ने आक्रमण किया
2. उदयसिंह
3. राव चन्द्रसेन (1562–1581) ई०

उत्तराधिकारी छोटे बेटे को बनाया

→ उपनाम
- "मारवाड़ का प्रताप"
- "भुला-बिसरा राजकुमार"
- "प्रताप का अग्रगामी"
- "मारवाड़ का विस्मृत नायक"

1570 ई० – अकबर ने नागौर में दरबार बुलाया — शुक्र तालाब बनवाया

दरबार में — "सुलहकुलनीती" ← अकबर की नीति ← राजाओं को अपना बनाने के लिए

अधिनता स्वीकार –
→ बीकानेर → कल्याणमल — पुत्र 1. राय सिंह 2. पृथ्वीराज
→ जैसलमेर → हरराय भाटी
→ हाड़ौती → सुर्जन हाड़ा
→ मालदेव → चंद्रसेन बिना अधिनता स्वीकार किये जोधपुर आ गया।

– अकबर ने हुसैन कुली खां के नेतृत्व में सेना जोधपुर भेजी → चन्द्रसेन भाग गया

- का जोधपुर किले पर अधिकार हो गया।
- ने जोधपुर का सुबेदार बनाया — रामसिंह (बीकानेर)
- ने जोधपुर को खालसा घोषित किया।
↓
वह भुमि जिस पर सीधा नियंत्रण केन्द्र सरकार करे।

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

- अकबर ने 1574 में जलाल खां, 1576 में शाहबाज खां → भेजा। — चन्द्रसेन हाथ नहीं आया

↓ परेशान होकर महान्नुण की पहाड़ियों में भाग गया। (सिवाना)

↓ मृत्यु

सचियात (सीवाण) → समाधि → केपास 5 रानियों की समाधि → स्मारक → मण्डोर

5 रानियों की समाधि ↑ सिद्ध → 5 रानियाँ सती हुई थी।

⇒ राव उदयसिंह (1583ई – 1595ई) :-

→ ने अकबर की अधिनता स्वीकार की।

→ ने मोटा राजा की उपाधि दी।

→ ने पुत्री जगत गुसाई (जोधाबाई) — विवाह — ~~खुर्रम~~ / जहांगीर / सलीम

प्रेमिका – अनारकली

↓ पुत्र खुर्रम (शाहजहां) ... पुनः विवाह

↓ मानबाई (आमेर)

↓ पुत्र

(अमीर खुसरो)

→ "मारवाड़ का पहला शासक जिसने मुगलों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किये"

→ (1995 लाहौर में स्वर्गवास)।

शूरसिंह (1595 – 1619)

→ 1604 में अकबर ने "सवाई राजा" की उपाधि दी।

→ अकबर व जहांगीर का समकालीन।

www.EducationLib.com

Notes

PAGE NO.:
DATE: / /

⇒ गजसिंह (1619 ई० – 1638 ई०)

↳ को जहांगीर ने दल थबेन की उपाधि दी।

↓

" समूह को रोक कर रखने वाला"

– 1638 में स्वर्गवास

⇒ महाराजा जसवंत सिंह I (1638 – 1678 ई०)

↳ को शाहजहाँ ने "महाराजा" की उपाधि दी।

↳ राज्यअभिषेक :– आगरा।

↳ को शाहजहां ने सूबेदार बनाया

1657 — शाहजहां बीमार —— उत्तराधिकार —— चार बेटे युद्ध

महाराजा जसवंत सिंह ——→ साथ दिया ——→

1. दारा शिकोह → हार गया
2. सूजा
3. मुराद
4. औरंगजेब

1658 धरमत का युद्ध (M.P.)

बाद में औरंगजेब से मिल गये।

दारा शिकोह

1659 में दौराई का (अजमेर) युद्ध → जीत गया

– से औरंगजेब पहले से ही नाराज था।

– मिलने के बाद 1659 व 1662 में गुजरात व मराठों को लूटने के लिए भेजा।

– लूटने में असमर्थ रहे।

– की 1678 ई० में जमरूद (अफगानिस्तान) में मृत्यु

↓ के बाद

औरंगजेब कहा –" आज कुफ्र का दरवाजा टूट गया" (मतलब आज मेरा धर्म-विरोधी मारा गया)

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

PAGE NO. :
DATE : / /

Notes

जसवंत सिंह → (पत्नि) जसवंत दे → पुत्र — अजीत सिंह

→ ने "भाषा भूषण" नामक ग्रंथ की रचना की।
— कागा उद्यान का निर्माण करवाया

ने राइका बाग व कल्याण सागर तालाब बनवाया।

→ के दरबारी कवि — मुहणोत नैणसी व सुंदर दास (नैणसी के भाई)

ग्रंथ (प्रसिद्ध)
1. "नैणसी री ख्यात"
2. मारवाड़ रा परगना री विगत"

"राज० के अबुल फजल फजल" — मुंशी देवी प्रसाद

→ नैणसी को राजस्थान में "जनगणना का अग्रज" कहा गया है।

दोनो कवि को औरंगजेब ने जेल में डाला दिया। परन्तु बाद में आजाद कर दिया। आजाद होने पर नैणसी ने आत्महत्या कर ली।

- महाराजा जसवंत सिंह की मृत्यु के समय रानी गर्भवती थी। अजीतसिंह का जन्म लाहौर में 1679 में हुआ। सरदारों ने औरंगजेब को कहा - अजीतसिंह को जोधपुर का राजा बनाया जाये। अजीतसिंह को मारने के लिए औरंगजेब ने उन्हे दिल्ली बुलाया।

2 रानियाँ — औरंगजेब ने तीनों को पकड़कर बंदी बनाया और दिल्ली ले गया

1 अजीतसिंह ← को इस्लाम कबुल कराने के लिए बोला — इस्लाम स्वीकार नही करवाया।

→ वरना जोधपुर को खालसा घोषित कर दुंगा।

↓

को खालसा घोषित कर दिया।

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

आशकरण राठौड़ :-

नौकरी के लिए जसवंत सिंह के पास।

↓ ने फुनेरा का जागीरदार बनाया।

की मां ने

↓ दुर्गादास राठौड़ का लालन-पालन किया।

— स्वामि भक्त था

↓ ने देखा कि आशकरण के खेतों में राइका-रेबारी ऊंट चरा रहा है।

मना करने पर अपशब्द बोले तो राइका रेबारी की हत्या कर दी।

इधर औरंगजेब अजीत सिंह को मारना चाहता था।

को बचाया

↓ गोराधाय / मुकुन्ददास खिची

↓ बाघेली महिला / मारवाड़ की पन्ना धाय

सौंपा

दुर्गादास राठौड़

↓ शरण ली

जयदेव ब्राह्मण (सिरोही) के घर

अजीतसिंह को मारवाड़ का शासक स्वीकार लिया — बहादुर शाह प्रथम ने

↓ पुत्री

इन्द्रा कुंवारी ← "अंतिम मुगल राजपूत विवाह" (*)

विवाह → फर्रुखशियर से (1715)

दुर्गादास को निकाला देश दिया

↳ ने शरण ली — मेवाड़ — अमरसिंह II के काल में

देहांत 1718 संग्राम सिंह II के काल में

स्मारक — रामपुरा गांव, उज्जैन (शिप्रा नदी के किनारे)

↳ को कर्नल टॉड ने कहा "1. मारवाड़ ऐसो पूत जन जैसो दुर्गादास"

"2. राठौड़ का यूलिसिस"

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

⇒ देबारी समझौता → अजीतसिंह + कच्छवाहा सवाई जयसिंह + मेवाड़ महाराणा अमरसिंह II के मध्य

Notes

PAGE NO.: DATE: / /

अजीत सिंह —— पुत्र —— अभय सिंह
बख्तर सिंह — के कहने पर — ने हत्या कर दी।
↳ "मारवाड़ का दूसरा पितृ हंता"

⇒ अभयसिंह राजगद्दी पर बैठे
↓ के काल में

(*) 1730 में 363 लोगों ने अमृता देवी बिश्नोई में साथ खेजड़ली गांव जोधपुर में खेजड़ी वृक्ष की कटाई को रोकने के लिए शहीद

" विश्व का एक मात्र वृक्ष मेला — खेजड़ी गांव (जोधपुर)
(भाद्रपद शुक्ल दशमी)

1994 — "अमृता देवी पुरस्कार" आरम्भ
↓
प्रथम बार पुरस्कार मिला — "गंगाराम बिश्नोई"

⇒ मानसिंह राठौड़ (1803 ई० – 1843 ई०)
- → संन्यासी राजा भी कहा जाता है।
- → राजा बनने की घोषणा 'देवनाथ' ने की।
- → "रसिले राज" नामक रचना लिखी।
- → ने जोधपुर में महामंदिर (नाथ सम्प्रदाय की पीठ) का निर्माण करवाया।
- → ने 1818 में चार्ल्स मेटकाफ के प्रयासों से E.I.C. से संधि की।
- → राज० के पहले राजा जिसने संधि तोड़ी।
- → 1843 में देहान्त।

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

7. आमेर का इतिहास

Notes

PAGE NO. :
DATE :

ढूंढ नदी —— आस-पास का भाग — ढूंढाड — आरम्भ में शासन किया — मीणाओं ने — बड़गुर्जरों ने।

नरवर के जंगल (m.p.) :- कुश के वंशज — कछवाह कहलाए।

⇒ 1137 में धौलाराय / दुल्हेराय / तेजकरण ने कछवाह वंश की स्थापना की।
- ने दौसा को राजधानी बनाया
- → ने कुल देवी जमवाय / अन्नपूर्णा का मंदिर निर्माण करवाया
- → ने 1150 में अम्बावती नगरी बसाया, जिसे आमेर नाम से जाना गया

(*) → 1207 में कोकिलदेव ने आमेर को राजधानी बनाया।

(*) → पृथ्वीराज मेवाड महाराणा संग्राम सिंह का समकालीन था। पृथ्वीराज ने खानवा का युद्ध 1527 में सांगा का साथ दिया।

(*) → पृथ्वीराज के पुत्र सांगा ने सांगानेर बसाया।

⇒ रतनसिंह कच्छावा
- ने शेरशाह सूरी की अधीनता स्वीकार की।
- → के काल में राव शेखा ने शेखावाटी बसाया।
- → भारमल के कहने पर आसकरण कच्छावा ने जहर दिया
- → 1547 में देहान्त

राजा भारमल (1547ई. से 1573ई.)
- परेशान थे → मीणाओं और गृहकलह से।
- को "अकबर" ने "राजा व अमीर उल उमरा" की उपाधि दी।
- → ने स्वेच्छा से अकबर की अधीनता स्वीकार की। भेंट मजनू खां / चगताई
- (*) की पुत्री जोधाबाई / हरका बाई / मरियम उज्जमानी
  - विवाह → अकबर (प्रथम मुगल - राजपूत विवाह)

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

Notes

PAGE NO.: DATE: / /

राजा भारमल का पुत्र → भगवन्तदास } — दोनों की नियुक्ति अकबर के दरबार में।
पौत्र → मानसिंह

→ राजा भगवन्तदास (1573 – 89 ई०)

- को प्रथम बार पांच हजारी मनसबदारी मिली।
- अकबर के नवरत्नों में एक।
- प्रताप को समझाने तीसरे मण्डल में भेजा — असफल रहा।
- सरनल (उत्तरप्रदेश) के मैदान में पागल हाथी को काबू कर अकबर को वीरता का परिचय दिया।
- ने पुत्री — **मानबाई** —विवाह→ **सलीम / जहांगीर** से
  - बेटा — **अमीर खुसरो**

मानसिंह Ist (1589 ई. — 1614 ई०)

- जन्म 1550 में। 12 वर्ष की आयु में ही अकबर सेना में गया (1562 ई०)
- लालन-पालन अकबर ने ही किया।
- अकबर का "दत्तक पुत्र" कहा जाता है।
- अकबर के "नवरत्नों" में एक।
- को "सात हजारी" मनसबदारी मिलती थी।
- अकबर ने फर्जन्द (बेटा) की उपाधि दी।
- प्रताप को समझाने दूसरे मंडल में गया। — असफल रहा।
- को अकबर ने "हल्दीघाटी का प्रधान सेनापति" बनाया।
- हल्दीघाटी के बाद मानसिंह की मनसबदारी छीन ली व दरबार से निकाल दिया
  - को कुछ समय बाद पुनः सेना में हाजिर किया
  - बंगाल, उड़ीसा, बिहार, लाहौर का सूबेदार बनाया।
  - बंगाल से **शिलादेवी** की मूर्ति आमेर लाया।
    - अष्टभुजी प्रतिमा।
    - नवरात्रों में मेला।
    - 2½ प्याले शराब चढ़ते हैं।

www.EducationLib.com

PAGE NO.: DATE: / /

Notes

ब्लू पॉटरी — मुलतः पर्शियाँ (ईरान)
↓ आई
लाहौर — से आमेर → मानसिंह Ist लाया।

(2) ब्लू पॉटरी — चीनीमिट्टी बर्तन
मऊ गाँव — सीकर
ब्लू पॉटरी के जादूगर / पद्म श्री से सम्मानित — स्व. श्री कृपाल सिंह शेखावत

* ब्लू पॉटरी का सर्वाधिक विकास रामसिंह II के काल में हुआ।

मानसिंह के दरबार में जगन्नाथ विद्वान व हापा बारहठ कवि रहते थे।
→ की रानी कँकावती ने पुत्र जगतसिंह की याद में जगत शिरोमणी मंदिर (आमेर) में बनवाया — वर्तमान मीरा मंदिर
→ दो मुगलों अकबर व जहाँगीर के समकालीन था।
→ सर्वाधिक लंबे समय तक मुगलों की सेवा की।
→ ईलीचीपुत्र (दक्षिणी भारत) में 1614 में देहान्त हुआ।

जयसिंह I (1621—1667 ई.)
→ को शाहजहाँ ने "मिर्जा राजा" की उपाधि दी।

जयसिंह Ist — सुबेदार — शाहजहाँ — बीमार — बेटे चार
→ साथ दिया → राजा बनाना चाहा।
1. दारा → धरमत का युद्ध (1658)
2. शुजा
3. मुराद
4. औरंगजेब (बनना चाहता था) → जीता
→ की सेवा में हाजिर हुये।

भेजा शिवाजी / शम्भाजी को झुकने
↓
झुक कर "जून 1665 में "पुरन्दर की संधि" की।

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

Notes

PAGE NO. :
DATE : / /

ने भला-बुरा बोला
पकड़ा व आगरा जेल में डाला

औरंगजेब —— दरबार लगा —— आगरा —— शिवाजी / शम्भाजी

→ टोकरी में छिपकर भाग गये

ने दोषी ठहराया व पकड़ने को बोला

जयसिंह — पकड़ने गया पर हाथ नहीं आया

ने जहर दिलवाया

→ 1668 में दक्षिणी भारत में देहान्त

→ के दरबार में बिहारी सतसई लेखक थे।

→ ने जयगढ़ दुर्ग पर तोप का रवारकाना, बनवाया।

→ वंशज (जयसिंह II ← पुत्र विशन सिंह)

*

जयसिंह II (1700 — 1743)

18 नवंबर
→ 1727 में जयपुर का निर्माता कर्ता
वास्तुकार
बंगाल निवासी → "विद्याधर भट्टाचार्य"

ने एकमात्र अश्वमेघ यज्ञ करवाया

→ 7 मुगल बादशाहों का समकालीन
1. औरंगजेब 2. बहादुर शाह Ist 3. जहाँदर शाह
4. फर्रुखशियर 5. रफी-उद-दरजात 6. मोहम्मदशाह रंगीला
7. रफी - उल दौला।

जयपुर की नींव रखी
↓
"पुण्डीक रत्नाकर"
↓
पुरोहित था।
↓ ग्रंथ
"जयसिंह कल्पद्रुम"

→ निर्माता था —
- चन्द्रमहल / सिटी पैलेस
- जल महल
- नाहर गढ़
- मान सागर
* - जयबाण तोप (एशिया की सबसे बड़ी तोप)
* - जंतर-मंतर — नक्षत्रों की शुद्ध सारणी — वेधशालाएं / ध्रुपदी

(2010 में यूनेस्को ने जंतर-मंतर को विश्व धरोहर घोषित किया)

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

मंदसौर का युद्ध, फरवरी 1733 — जयपुर महाराजा सवाई जयसिंह II व मराठा

PAGE NO.:
DATE: / /

Notes

सवाई जयसिंह ने "युनानी लेखक — युक्लीड की रेखा गणित का संस्कृत में अनुवाद किया

→ ने "विधवा विवाह" को बढ़ावा दिया। "मोहम्मद शाह रंगीला भेंट किया
→ के दरबार में "कलानिधी" कवि रहते थे।
→ स्वयं ने ग्रंथ लिखे → जयसिंह कारिका 2. जीजी मुहम्मद शाही

→ जयसिंह ने औरंगजेब की मृत्यु के बाद आजम का पक्ष लिया। परन्तु मुअज्जम की विजय हुई। जयसिंह को सबक सिखाने के लिए जयसिंह के छोटे भाई को शासक बनाया व आमेर का नया नाम बदलकर "मोमिनाबाद" रखा।

*** देबारी समझौता →** मेवाड़ महाराणा अमरसिंह II + जोधपुर राजकुमार अजीतसिंह + सवाई जयसिंह → मुअज्जम के विरुद्ध

सवाई जयसिंह II — भरतपुर — चुड़ामन जाट ने विद्रोह → सवाई मोहम्मद शाह रंगीला के काल में।
- कूटनीति का प्रयोग किया
- भतीजा → बदनसिंह
- को अपनी ओर मिलाया — बदनसिंह को ब्रजराज की उपाधि दी, डीग का शासक स्वीकार किया।
  ↓ "जल महलों की नगरी"
- मृत्यु 1 सितम्बर 1743
- ↓ हुरड़ा सम्मेलन 17 जुलाई 1734 — "मराठों का आगमन हुआ"

सवाई ईश्वरी सिंह (1743–1750 ई.)

→ 1747 ई. में टोंक के पास मराठों से विजय प्राप्त की।
↓
~~(राजमहल का युद्ध)~~

→ ने जीत के उपलक्ष में ईसरलाट / सरगासूली मीनार बनाई
↑ 1749 — त्रिपोलिया बाजार

→ 1750 में मराठा मल्हार राव मल्हार के डर से आत्महत्या की।

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

Notes

PAGE NO.: DATE: / /

सवाई माधोसिंह I (1750–1768ई०)

- 1763ई० में सवाई माधोपुर बसाया
- ने मराठा का आमेर में कत्लेआम किया।
- ने नाहरगढ़ में "नौ महल" बनवाए।
- मोती डूंगरी महल बनवाये
  - मेला → "फाल्गुन कृष्ण 13"
- ने शील की डूंगरी चाकसू में शीतलामाता का मंदिर बनवाया।
- 1768 में मृत्यु

सवाई प्रताप सिंह (1778–1803)

- हवामहल का निर्माण करवाया { 953 — खिड़कियां, 365 — झरोखे }
  - पांच मंजिला
  - वास्तुकार — "लालचन्द गुप्ता"
- ने स्वयं "ब्रजनिधि" नामक कविता की रचना की।
- ने संगीत सम्मेलन करवाया — "राधागोविन्द संगीत सार"
  - लेखक → देवर्षि भट्ट ब्रजपाल
- ने जुलाई 1787 तुंगा के मैदान में जोधपुर नरेश विजयसिंह के साथ मिलकर मराठा सेनापति महादजी को हराया।

जगत सिंह द्वितीय

- कृष्णा कुमारी विवाद (1807) → जगतसिंह द्वितीय + भीमसिंह मेवाड़ महाराणा + जोधपुर नरेश मानसिंह
- ने 1818 में E.I.C से संधि की।

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

Notes

PAGE NO.:
DATE: / /

=> महाराजा रामसिंह II (1835- 1880ई.)

→ "1857 की क्रांति" में अंग्रेजों की मदद की।
- अंग्रेज सरकार ने "सितार-ए-हिन्द" की उपाधि दी।
- उपहार में - कोटपुतली मिली।

→ के पॉलिटिकल एजेन्ट — लुडलो ने सती प्रथा / दास प्रथा / कन्या वध / दहेज प्रथा पर रोक लगाई।

→ ने मदरसा-ए-हुनरी की स्थापना / राज० स्कूल ऑफ आर्टस — किशनपोल-जयपुर में बनवाया।

→ 1845 में महाराजा कॉलेज व संस्कृति कॉलेज का निर्माण करवाया।

- के दरबार में 1876 को प्रिंस ऑफ वेल्स अल्बर्ट आया

↓

स्वागत में — अल्बर्ट हाल — रंग गेरुआ करवाया,

जयपुर को "गुलाबी रंग" से रंगवाया।

वास्तुकार → स्टीवन जैकब

ब्रिटेन का राजा — प्रिंस वेल्स की भारत यात्रा का वर्णन "रॉयल टाउन ऑफ इण्डिया" → स्टेण्डरी

महाराजा मानसिंह द्वितीय (

→ अंतीम जयपुर महाराजा।
→ 30 मार्च 1949 — वृहद राज० — प्रथम राजप्रमुख बने
→ 1 नवम्बर 1956 को "राज्यपाल" नियुक्ति तक कार्य किया

Scanned with CamScanner

www.EducationLib.com

*

PAGE NO. :
DATE : / /

Notes वंश — कुलदेवी

वंश		कुलदेवी
कछवाह वंश	—	जमवायमाता / अन्नपूर्ण माता
जोधपुर के राठौड़	—	नागणेच्यीमाता
उदयपुर के सिसोदिया	—	बाणमाता
बीकानेर के राठौड़	—	करणीमाता
जैसलमेर के भाटी	—	स्वांगियामाता
सांभर के चौहान	—	शीलामाता
जालोर के चौहान	—	आशापुरामाता
खंगारोतों की कुलदेवी	—	ज्वालामाता
भरतपुर जाट वंश	—	राजेश्वरीमाता
कोटा हाड़ा वंश	—	भदाणामाता

* चौहान वंश के प्रमुख संस्थापक

शाकम्भरी	—	वासुदेव-चौहान
जालौर	—	कीर्तिपाल चौहान
नाडौल	—	लक्ष्मण सिंह
रणथम्भौर	—	गोविन्दराज
सिरोही	—	लुम्बा देवड़ा
हाड़ौती	—	देवासिंह हाड़ा

Scanned with CamScanner